Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 19/November/2024 IJRAW: 2024; 3(12):162-166 Accepted: 26/December/2024

माटी कहे कुम्हार से (श्यामोता के शम्भूदयाल प्रजापत के विशेष संदर्भ में)

[*1]डॉ. कृष्णा महावर और [2]आयशा परवीन

[*1]असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

[2]शोधार्थी, चित्रकला विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

सारांश

राजस्थान अपनी कला संस्कृति व परम्परा के लिए सदैव से अलग पहचान रखता है यहाँ की कला का जितना धार्मिक महत्व है उससे कहीं अधिक कलात्मक महत्व रहा है। इस शोध पत्र को लिखने का मेरा उद्देश्य मुख्यतः तो यह मेरे शोध का अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है दूसरा एक कुम्हार के अर्न्तमन की जिज्ञासा को जानने की इच्छा के चलते ही मुझे इस शोध पत्र को लिखने के लिए प्रेरित किया। मिट्टी ऐसा खनिज पदार्थ है जिससे प्रत्येक व्यक्ति या यू कहे शायद ही कोई व्यक्ति होगा जो अपने बाल जीवन में इससे परिचित हुए बिना ना रहा हो बाल जीवन की यह कला ना जाने कब एक पौधे से वृक्ष में परिवर्तित हो जाती है। अर्थात जो कला हमारे लिए एक खेल मात्र है वहीं किसी कुम्हार के सम्पूर्ण जीवन का सार होती है राजस्थान के प्रत्येक क्षेत्र में कुम्हार व कुम्हारी कला देखने को मिल जाती है कई स्थान तो वर्तमान में राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बना रहे है परन्तु इन सबके विपरीत कई स्थान ऐसे भी है जहां कार्य तो होता है परन्तु शिक्षा व सरकारी सहायता की कमी के कारण वे स्थान उभर नहीं पाता ना ही ज्यादा से ज्यादा लोग उस स्थान के बारे में जान पाते हैं कुछ ऐसी ही स्थिती है श्यामोता गाँव की जहाँ ब्लेक पॉटरी का कार्य होता है। यह कार्य प्रमुख रूप से शम्भूदयाल प्रजापत करते हैं इनके बनाये बर्तन व सजावटी सामग्री की आर्डर के रूप में बिक्री होती है। सामान्य लोगों को जानकारी कम होने से लोगों की रूचि भी दिखाई नहीं देती। टेराकोटा के इन उत्पादों की बिक्री हमारे देश में कम विदेशों में ज्यादा हो रही है तथा व अपने दैनिक उपयोग में इन बर्तनों का प्रयोग कर रहे है।

वर्तमान में इस शोध पत्र को लिखने का मेरा उद्देश्य श्यामोता के शम्भूदयाल प्रजापत के कार्य से लोगों को परिचित कराना मात्र है।

मुख्य शब्दः सवाई माधोपुर, ब्लेक पॉटरी, श्यामोता गाँव, मृण्मूर्तियाँ, शम्भूदयाल प्रजापत।

प्रस्तावना

माटीशिल्प, माटीकला, मृतिकाशिल्प, मृण्शिल्प, मृदाशिल्प, मृदामयी मृण्मयी, महीमयी, कुम्हारी, कुलाल कला, कुलाल विज्ञान या टेराकोटा ये सब इस महिमामयी माटीशिल्प के ही नाम है। [1] राजस्थान के प्रत्येक नगर व गाँव में कुम्हार मिट्टी के द्वारा विभन्न प्रकार के दैनिक उपयोग के उपकरण व सजावटी सामग्री बनाते है। गाँव में कुम्हारों के रोजगार का मुख्य साधन कुम्हारी कला है पुराने लोग पुश्तैनी रोजगार मानकर आगे बढ़ाते है।

यह कला इन लोगों का बुनियादी विकास तो करती ही है। साथ ही इसका इतिहास सांस्कृतिक विरासत से भी जुड़ा है ये कार्य प्रत्येक स्थान पर होता है परन्तु कुछ स्थान ऐसे हैं जो अपनी प्रमुख विशेषताओं के लिए अलग पहचान रखते है। जैसे मोलेला अपनी हींगाण कलाकृतियों, बर्तनों, सजावटी कलाकृतियों व देवी – देवताओं की पट्टिकाओं के लिए जाना जाता है तो रामगढ़ अपनी कागजी व मिनिएचर पॉटरी के रूप में अलग पहचान लिये है वही एक अन्य स्थान सवाई माधोपुर जो अपनी कई विशेषताओं के लिए जाना जाता है। प्रथम तो यह शहर वन्य जीवों और प्राकृतिक सुंदरता का एक आदर्श मिश्रण है इस शहर का नाम महाराजा सवाई माधोसिंह जी प्रथम के नाम पर रखा गया। उन्होंने

*Corresponding Author: डॉ. कृष्णा महावर

1765 ई. में शहर को उसकी वर्तमान योजना दी। इस शहर ने राणा कुम्भा से लेकर अकबर और औरंगजैब तक कई ऐतिहासिक शासन देखे प्रत्येक शासक ने शहर के जीर्णोद्धार और सौन्दर्यीकरण में अपनी भूमिका निभाई। [2]
अमरूदों की अधिक पैदावार होने के कारण अमरूदों की नगरी कहाँ जाता है। प्रथम टाईगर परियोजना का प्रारम्भ भी यही हुआ इस की झलक यहाँ के टेराकोटा शिल्पों में देखने को मिलती है। इतिहास का प्रथम साखा यही पर हुआ तो एक तरफ बनास तो दूसरी और चम्बल नदीयां भी यहीं पर स्थित है इसके अतिरिक्त इससे भी आकर्षण का केन्द्र है यहाँ का रेल्वे स्टेशन दीवारों को पशु–पक्षीयों की कलाकृतियों से सुसज्जित किया गया है, अन्ततः सबसे महत्वपूर्ण है यहाँ के काले मिट्टी के बर्तन, मूर्तियाँ, खिलौने व पट्टिकायें आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं। वैसे तो काले मिट्टी के बर्तनो की उत्पति चीन में नवपाषाण काल (12000 ई. पू.) के दौरान हुई थी और इस विधि को लॉन्ग शान संस्कृति (3000 ई. पू.) द्वारा परिपूर्ण किया गया था। काले मिट्टी के बर्तनों के शुरूआती काम प्राचीन पूजा के पानी के बर्तनों के रूप में मिले फिर यह शाही परिवारों के दैनिक जीवन के लिए घरेलू सामान के रूप में प्रयोग लाये जाने लगें। [4]
मूर्ति निर्माण की यह कला प्राचीन काल से ही काफी उन्नत और विकसित है। आधुनिक काल में या वर्तमान समय में मिट्टी के खिलौनों और मूर्तियों के निर्माण की कला ने एक उद्योग का रूप धारण कर लिया है। [5]
भारत में प्रचलित काले मिट्टी के बर्तनों की परंपराओं में उत्तरप्रदेश का आजमगढ प्रमुख है परन्तु राजस्थान के सवाई माधोपुर की ब्लेक पॉटरी अपनी बनावट डिजाइन और मिट्टी के बर्तनों की सतह पर नक्काशी व अपनी खुबसूरत शिल्प परम्परा के लिए अपने आप में अद्वितीय शैली है।
स्टेशन से करीब 16 किलोमीटर दूर बसा छोटा सा गाँव है श्यामोता पूरे सवाई माधोपुर में ना होकर केवल यही एक मात्र स्थान पर ही ब्लेक पॉटरी का कार्य होता है। प्रमुख रूप से शम्भूदयाल प्रजापत का परिवार इस कार्य को करता है। इनके परिवार में यह गड़ीय कूलड़ी की परम्परा से चला आ रहा है परन्तु समय के साथ कुम्हारों में भी कई तरह के परिवर्तन आए रहन–सहन पहनावा, इत्यादि बदले वही शिक्षा यातायात के विकास एवं नए तरह के बर्तनों के प्रयोग से इनकों अपने रोजगार के लिए लड़ना पड़ा। इन सबके बावजूद उनके कार्य में विशेष परिवर्तन नहीं आया इनको काम करता देखकर कहाँ नहीं जा सकता कि इनका कोई विकास हुआ है। [7]

शम्भूदयाल प्रजापत

चित्र 1: शम्भूदयाल प्रजापत

बाह्य और आन्तरिक मन में जो उथल–पुथल होती है वही कला को जन्म देती है मानव की सहज प्रवृतियों ने ही कला को जन्म दिया है यह किसी संस्था में नहीं सिखाई जाती है। यह तो ईश्वर के द्वारा कुछ चुने हुए व्यक्तियों को दिया गया उपहार है ऐसी ही एक कला है माटी की कला "टैराकोटा"। यदि मिट्टी उपलब्ध हैं तो कलाकार इसके प्रयोग में आने वाले उपकरण स्वयं ही बना लेता है। इस कार्य में उसके सर्वप्रथम साथी उसकी उगलियाँ व कल्पना होती है। अपने इन साथीयों के सहयोग से वह बिना किसी बाजारू या आधुनिक यंत्र व बिना किसी तकनीकि ज्ञान के भी नाना प्रकार के असंख्या कलाकृतियां तैयार कर लेता है। ऐसे ही कलाकार है शम्भूदयाल प्रजापत मिट्टी मात्र से सवाई माधोपुर को अलग पहचान दे रहे है। शम्भूदयाल जी को यह कार्य करते हुए करीब 30 साल हो गये है इनके दादा–परदादा ने चिमनीयाँ बनाने के कार्य से इसकी शुरूआत की थी, पिताजी जयराम प्रजापत आज भी वहीं पुराने चाक पर कार्य करना पसन्द करते है। इनके दो छोटे भाई मुकेश व रामदयाल प्रजापत दोनों यही कार्य करते है। पहले इनके परिवार के कुल 40–50 लोग इसी कार्य से जुड़े थे परन्तु रोजगार की सम्भावना कम होते देख अन्य कार्यों में चले गये। अब केवल 10 या 12 लाग ही टेराकोटा कला से जुड़े है। इस कार्य में महिलाओं का प्रमुख स्थान रहता है। सुबह जल्दी उठकर गोबर से कण्डे बनाती है तभी भट्टी जलती है। साथ ही तैयार कलाकृतियों पर डिजाइन डालने में भी सहयोग करती है। दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद भी दो या तीन उपकरण ही बनकर तैयार होते है।

मिट्टी

श्यामोता में प्रमुख रूप से पीले रंग की मिट्टी मिलती है। यह करीब 50 किलोमीटर दूर बनास नदी के पास दूरभी खेत में तालाब से लाई जाती है, करीब 1 ट्रोली की कीमत 15,000/–व आने–जाने का किराया 2,000 कुल मिलाकार 17,000 एक ट्रोली का बैठता है। जो आज के महँगाई के समय में कहीं ज्यादा है। पहले तो मिट्टी नदियों के किनारें से मुफ्त में मिल जाती थी।

मिट्टी तैयार करना

मिट्टी प्राप्ति के बाद मिट्टी के ढ़गल को पत्थर से कूटकर छलनी से छाना जाता है बारीक पाउडर अलग मोटा पाउडर अलग करते है मोटे पाउडर को पानी में 15–20 मिनट तक भिगोया जाता है जब अच्छे से गुल जाती है तो बारीक पाउडर से उसे गुथा जाता है मिट्टी के कूटने, छानने व गूँथने की प्रक्रिया में कुम्हार और मिट्टी के संघर्ष को देखकर संत कबीर का एक दोहा सटीक बैठता है–

माटी कहे कुम्हार से तू क्या रूँधे मोहिं।
एक दिन ऐसा होएगा, मैं रूँधूँगी तोहिं।। [6]

तैयार मिट्टी को 'प्लास्टिक की थैली में 10 दिन तक सुरक्षित रखा जा सकता है। बर्तन बनाने हेतु चाक पर उतारा जाता है।

औजार व डिजाइन डालना: शम्भू जी कुछ कलाकृतियाँ चाक पर कुछ हाथ से बनाते है जब कलाकृतियाँ अधसुखी होती है तभी उन पर डिजाइन डाला जाता है इसके लिए शम्भूजी घर में पड़े टूटे पैन, चाक, फिट्टा व बिहाला आदि औजार के रूप में काम में लेते है। इन से फूल व ज्यामितिय अलंकरण बनाते है।

कलाकृतियों पर पोलिश: अधसूखी कलाकृतियों को पीला रंग करने के लिए पहाड़ी से पीला पत्थर लाया जाता है। इसे पानी में भीगोकर ढ़ोक वृक्ष का गोंद मिलाकर पीला रंग बनाया जाता है बनी हुई कलाकृतियों को इस घोल में अच्छे से डूबोकर घूप में सुखाया जाता है इसके बाद तेल लगाकर कपड़े से अच्छे से रंगड़ा जाता है जितनी अच्छी घिसाई होगी उतनी ही अच्छी चमक बर्तन पकने के बाद आयेंगी।

भट्टी (हाऊ) जमाना व पकाई प्रक्रिया: तैयार बर्तनों को भट्टि (हाऊ) में पकाई के लिए खुले स्थान पर भट्टी बनाई जाती है व रात के अंधेरे में करीब 10 या 11 बजे के समय जलाई जाती है भट्टी (हाऊ) में सर्वप्रथम बनाई हुई कलाकृतियाँ रखते है। फिर उस पर कण्डों को लगाया जात है। करीब 100 कलाकृतियां एक बार में पकाई जा सकती है। इसके बाद इस पर राख डालकर ढ़का जाता है व आग जलाई जाती है पूरी रात परिवार के किसी ना किसी व्यक्ति को जगना पड़ता है रात के अन्धेरे में ही पकाई का पता चलता है, सुबह सात या आठ बजे भट्टी (हाऊ) खोल दी जाती है। भट्टी (हाऊ) से निकला बर्तन लाल रंग का दिखाई देता है। शम्भूजी बताते है यह कार्य यही समाप्त नहीं होता। पकाई की प्रक्रिया दो बार में की जाती है। अब इसमें कण्डों के स्थान पर बकरी की मिंगनी (मल) व घास–फूल डाल अच्छे से ढ़का जाता है मिंगनी भट्टी (हाऊ) में गैस से बनाती है जिससे बर्तनों का रंग काला हो जाता है। यह पूरी तरह प्राकृतिक है इनमें किसी तरह की मिलावट नहीं रहती यही एकमात्र विशेषता है श्यामोता के काले बर्तनों व उपकरणों की।

कलाकृतियाँ

श्यामोता में बनने वाली कलाकृतियाँ इस प्रकार हैं–

1. **देवी–देवताओं की मूर्तियाँ:** यहाँ प्रमुख रूप से हनुमान व गणेश जी की मूर्तियाँ बनाई जाती है ये 1 या 150 फीट तक की ही होती है।
2. **पशु आकृतियाँ:** श्यामोता में टेराकोटा टाईल व पशु आकृतियाँ प्रमुख रूप से बनाई जाती है। इनके विषय प्रमुख रूप से शेर, हाथी, घोड़े, ऊँट, कछुआ, हिरण सांभर आदि है।
3. **दीपावली पर बिकने वाले उपकरण:** सादा दीपक, जुड़वा दीपक (दो या तीन) टी लाईट (दीपक व मोमबती जुड़ी) बनाये जाते हैं।
4. **दैनिक उपयोग में आने वाले बर्तन:** भगौनी, दही जमाने की हाण्डी, कड़ाही, कप, गिलास, चाय की केतली, पानी का जग, सुराही, मग, हुक्का पलेट, तश्तरी आदि।
5. **सजावटी उपकरण:** लालटेन, घण्टी, टाइले, फूलदान, फूलों के बर्तन।

चित्र 2: मिट्टी का हाथी

चित्र 3: टेराकोटा टाईल

चित्र 4: मोर की आकृति का जार

प्रमुख समस्या

एक तरफ जहाँ प्रसिद्धि प्राप्त हो रही है वही दूसरी तरफ समस्या भी कम नहीं है, मौसमी प्रभाव सदैव ही रहता है गर्मी में मिट्टी सूखने का डर रहता है व आर्डर का काम भी कम ही आता है और सर्दी में कण्डे सूखते नहीं है और बिना कण्डों के भट्टी (हाऊ) नहीं जलती। समस्या यही समाप्त नही होती इससे गम्भीर समस्या यह है कि लोग यहाँ के बारे में कम ही जानते है वे कम ही लोग यहाँ तक पहुंच पाते है। साल में 1 या 2 बार कोई विदेशी पर्यटक या शोद्यार्थी ही आते हैं पहले कुलतपुरा रणथंभौर दस्तकार की तरफ से इन्हें दिल्ली बुलाया जाता था परन्तु आने–जाने व रहने का खर्चा ज्यादा होने व सामान के टूटने के डर से अब वहा जाना बन्द कर दिया। परन्तु राजीविका की तरफ से मेले में आमंत्रित किया जाता है। यहां भी एक समस्या है कि लोग खरीदते कम है लेकिन एक फायदा होता है कि आर्डर का काम मिल जाता है। मेले इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि मेलों में ही इनके काम का प्रचार होता है।

शम्भूजी की बनाई कलाकृतियाँ अहमदाबाद, चण्डीगढ़, बम्बई, बैंगलोर, हैदराबाद तक जाती है। शम्भूजी को एक मेडम आर्डर का काम देती है व इनके माल को खरीद आगे आनलाइन बेचती है इसके एवज में इन्हें प्रत्येक उत्पाद पर 200 या 250/–मिलते हैं। परन्तु आगे यह 500 या 1000/–तक बिकता है। बस इस उम्मीद से कार्य करते है कि आर्डर के काम से घर चल जाता है।

चित्र 5: शम्भूजी द्वारा बनाई गई विभिन्न कलाकृतियाँ

निष्कर्ष

गाँव हो या शहर चाहे कितनी ही विपन अवस्था में हो परन्तु कुम्हार अपने परम्परागत व्यवसाय कुम्हारी कला को कभी नहीं छोड़ सकता और छोड़े भी क्यूं यही एक मात्र कार्य ही तो इनकी पहचान है जो इन्हें दूसरों से अलग करती है। साधारण सा जीवन जीने वाले इन कुम्हारों के रहन–सहन में परिवर्तन आया है शम्भूजी अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देना चाहते है भले ही वह आगे कुम्हारी का कार्य करे या ना करे। शान्त से स्वभाव के दिखने वाले शम्भूजी जितनी मेहनत व लगन से कार्य करते है उतना मेहनताना भी उन्हें नहीं मिल पाता है। शम्भूजी थोड़ा बहुत समझते है तो परिवार का गुजारा चल जाता है। शम्भूजी ऐसे कलाकार है जो धन की अधिक लालसा ना करते हुए कभी चाक तो कभी हाथ से ही पूरी कलाकृति बना डालने की जिज्ञासा लिये कार्य करने में सृजनशील है केवल जीविकोपार्जन तक ही इनका जीवन सीमित है मैं निष्कर्ष में यही कहना चाहूँगी की मिट्टी की इस कला का महत्व पहले जितना था उसे कहीं अधिक वर्तमान काल में हो गया है। आज यह कला उद्योग का रूप धारण कर कई लोगों के जीविकोपार्जन का साधन बन अपनी चरम सीमा पर है तथा विदेशों में खूब पहचान बना रही है। बढती मांग को देखते हुए शम्भूजी के सहयोग से सरकार द्वारा श्यामोता की ब्लेक पॉटरी की जगह–जगह प्रशिक्षण कार्यशालायें लगाई जाये व ऐसे बाजार उपलब्ध कराये जिससे उनकी मेहनत का सीधा लाभ शम्भूजी को मिल सके साथ ही सरकार इन्हें आधुनिक तकनीक से अवगत कराये। सरकारी सुविधायें मुहैया कराये ताकि ये अपने पारम्परिक शिल्प में बदलाव कर नये–नये प्रयोग कर सकें जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग श्यामोता की ब्लेक पॉटरी से अवगत हो सकेंगे। इसके अतिरिक्त जगह–जगह ग्रामीण–हाट, कला मेले व प्रदर्शनी का आयोजन किया जायें जिसमें ये लोग अपना माल स्वयं बेच भी सके व इनके कार्यों को लोगों को करीब से देखने का मौका भी मिल सकेंगा।

संदर्भ

1. राजस्थान का माटीशिल्प, प्रथम संस्करण 2013, शर्मा, देवदत्त, पृ. सं. अपप
2. https://gaatha.com/black.pottory
3. https://swadesi.org/impressions.com
4. https://dastkarranthambore.wordpress.com/page/2/
5. समकालीन कला, अंक 17 मई, 1996, जोशी, ज्योतिष, पृ. सं. 56
6. प्राचीन भारतीय मिट्टी के बर्तन प्रथम संस्करण वि. संवत्, 2097 राय गोविन्दचंद प्र. सं. 4
7. राजस्थान की ग्रामीण कलाएँ व कलाकार, प्रथम संस्करण मार्च 1997, कोठारी, गुलाब, पृ. सं0. 34
8. कुम्हार/कलाकार–कुम्हार शम्भूदयाल प्रजापत जी (साक्षात्कार), श्यामोता ब्लेक पॉटरी, सवाई माधोपुर, 27 जनवरी, 2024
9. पारम्परिक कला एवं लोक संस्कृति, माथुर, कमलेश, संस्करण 2010, अपनी बात।